कबीरदास

जीवन एवं साहित्यिक परिचय

जीवन-परिचय-

सन्त कबीर का जन्म संवत् 1455 (सन् 1398 ई०) में एक जुलाहा परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम नीरू एवं माता का नाम नीमा था। कुछ विद्वानों का यह भी मत है कि कबीर किसी विधवा ब्राह्मणी के पुत्र थे, जिसने लोक - लाज के भय से जन्म देते ही इन्हें त्याग दिया था । नीरू एवं नीमा को ये कहीं पड़े हुए मिले और उन्होंने इनका पालन - पोषण किया। कबीर के गुरु प्रसिद्ध सन्त स्वामी रामानन्द थे। इनकी पत्नी का नाम लोई था। इनकी दो सन्तानें थीं- - पुत्र का नाम कमाल था और पुत्री का नाम कमाली। अधिकांश विद्वानों के अनुसार कवीर 1575 वि ० (सन् १५१८ई०) मगहर में स्वर्गवासी हो गए।

साहित्यिक परिचय-

कबीर पढ़े - लिखे नहीं थे। उन्होंने स्वयं ही कहा है-

मसि कागद छूयो नहीं, कलम गह्यो नहीं हाथ।

उन्होंने स्वयं अपनी रचनाओं को लिखा है। इसके पश्चात् भी उनकी वाणियों के संग्रह के रूप में रचित कई ग्रन्थों का उल्लेख . मिलता है। इन ग्रन्थों में 'अगाध - मंगल', 'अनुराग - सागर','अमरमूल', 'अक्षर - खण्ड की रमैनी', 'अक्षर भेद की रमैनी', 'उग्रगीता', 'कबीर की वाणी', 'कबीर', 'कबीर - गोरख को गोष्ठी', 'कवीर की साखी', 'बीजक', 'ब्रह्म निरूपण', ' मुहम्मद बोध', 'रेखता विचारमाला', 'विवेक सागर', 'शब्दावली', 'हंस - मुक्तावली', ' ज्ञानसागर' आदि प्रमुख हैं। अभी तक यह निश्चित नहीं किया जा सका है कि ये ग्रन्थ कबीर द्वारा ही रचित काव्य के संग्रह हैं अथवा नहीं।

कबीर रहस्यवादी, समाज - सुधारक, पाखण्ड के आलोचक, मानवतावादी और समानतावादी कवि थे। इनके काव्य में दो प्रवृत्तियाँ मिलती हैं – एक में गुरु एवं प्रभुभक्ति, विश्वास, धैर्य, दया, विचार, क्षमा, सन्तोष आदि विषयों पर रचनात्मक अभिव्यक्ति तथा दूसरी में धर्म, पाखण्ड, सामाजिक कुरीतियों आदि के विरुद्ध आलोचनात्मक अभिव्यक्ति देखने को मिलती है।

कृतियाँ-

कबीर की वाणियों का संग्रह' बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है, जिसका संकलन इनके शिष्य धर्मदास ने किया था, जिसके तीन भाग हैं-

1. साखी – कबीर की शिक्षा और उनके सिद्धान्तों का निरूपण अधिकांशतः ' साखी ' में हुआ है । इसमें दोहा छन्द का प्रयोग हुआ है।

2. **सबद-** इसमें कबीर के गेय - पद संगृहीत हैं । गेय - पद होने के कारण इनमें संगीतात्मकता पूर्ण रूप से विद्यमान है। इन पदों में कबीर के अलौकिक प्रेम और उनकी साधना - पद्धति की अभिव्यक्ति हुई है।

3. **रमैनी-** इसमें कबीर के रहस्यवादी और दार्शनिक विचार व्यक्त हुए हैं । इसकी रचना चौपाई छन्द में हुई है